नया साल, नया वायरस

विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक युगांडा के ज़ाइका जंगलों में खोजे गए ज़ाइका वायरस पर नियंत्रण वर्ष 2016 की प्रमुख चुनौती होगी। यह वायरस

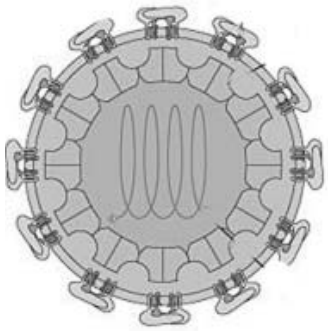

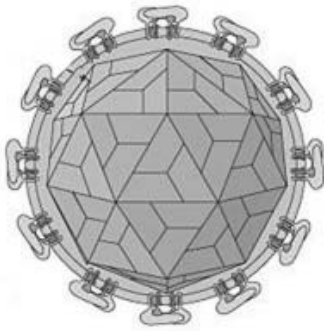

मच्छरों के माध्यम से फैलता है। दरअसल यह वायरस 1947 में खोजा गया था और अफ्रीका तथा दक्षिण-पूर्व एशिया में इसकी वजह से छिटपुट प्रकोप होते रहे हैं।

अलबत्ता, पिछले 10 वर्षों में प्रशांत सागर के कई द्वीपों पर वायरस ने रोग फैलाया है। जैसे 2007 में याप द्वीप के 80 प्रतिशत लोग ज़ाइका के संक्रमण की चपेट में आए थे। पिछले साल ब्राज़ील में हमला करने के बाद यह नौ और देशों में पहुंच गया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की सिलवियन एल्डीगिएरी का मत है कि यह वायरस जिस तेज़ी से फैल रहा है, उसे देखते हुए लगता है कि स्वास्थ्य सेवाओं को इसके लिए तैयार हो जाना चाहिए और इसके मामलों की सख्त निगरानी की जानी चाहिए।

वयस्क लोगों में यह वायरस शरीर पर चकत्ते पैदा करता है जो दर्दनाक तो होते हैं मगर अस्थायी ही होते हैं। इस लिहाज़ से इसके लक्षण बहुत गंभीर नहीं हैं। मगर यह माना जा रहा है कि यह वायरस अजन्मे बच्चों में मस्तिष्क को क्षति पहुंचा सकता है। एम्सटरडम विश्वविद्यालय के कटिबंधीय व सफरी चिकित्सा केंद्र के अब्राहम गूरहुइस का कहना है कि वैसे अभी तक ज़ाइका के संक्रमण और अजन्मे बच्चों में मस्तिष्क क्षति का परस्पर सम्बंध प्रमाणित नहीं हुआ है मगर ब्राज़ील और पोलीनेशिया में जहां भी वायरस का प्रकोप हुआ है, वहां मस्तिष्क के विकारों में नाटकीय वृद्धि देखी गई है। इसका मतलब है कि गर्भवती महिलाओं को खास सावधानी बरतनी चाहिए और मच्छरों से बचने का हर संभव प्रयास करना चाहिए।

अन्य ऐसे वायरस प्रकोपों के समान ही इसका भी कोई इलाज नहीं है और न ही टीका उपलब्ध है। इसके प्रसार को रोकने का प्रमुख उपाय भी कई अन्य बीमारियों जैसा ही है। मच्छरों के प्रजनन स्थलों पर नियंत्रण किया जाए, मच्छरों की आबादी को न बढ़ने दिया जाए और मच्छर काटने से बचा जाए। ऐसा लगता है कि वही कहावत चरितार्थ हो रही है कि एक को साधे सब सधे, सब साधे सब जाए। ***(स्रोत फीचर्स)***